M.A. Semester - 01
Philosophy CC-03

Prof Ragini Trivedi
Prof & Head
P.G. Dept. of Philosophy
Maharaja College, Ara

अरस्तू के अनुसार Form और Matter की द्वैधिप्र विवेचना (Unit-II)

अरस्तू के अनुसार जगत की वस्तुएं द्रव्य रूप और द्रव्य का मिश्रण है। परन्तु अब प्रश्न उठ सकता है कि क्या अरस्तू का स्वरूप से मतलब आकार से था लेकिन अरस्तू आकार को स्वरूप नहीं माना है। स्वरूप और आकार में अन्तर है। आकार का अध्ययन हम रेखागणित में करते हैं जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज आदि। लेकिन वास्तव में ऐसी आकृतियाँ नहीं है। यहाँ पर यह स्पष्ट है कि कोई वस्तु चतुर्भुजाकार या त्रिभुजाकार हो सकती है, परन्तु त्रिभुज या चतुर्भुज अपने आप में कोई अस्तित्व नहीं रखता।

वस्तुतः न तो 'द्रव्य' से Aristotle का तात्पर्य 'भौतिक द्रव्य' से है और न स्वरूप का 'आकार' से है। यद्यपि इन दो विचारों में पर्याप्त साम्य है पर इसका यह अर्थ नहीं कि ये दोनों एक हैं। जिस प्रकार आकार और स्वरूप में अन्तर है ठीक उसी तरह अरस्तू द्रव्य और भौतिक द्रव्य में अन्तर करता है। द्रव्य की हमारी साधारण कल्पना एक निरपेक्ष वस्तु से है जो सर्वथा द्रव्य ही बनी रहती है, जब तक कि उसमें परिवर्तन नहीं किया जाये। ऐसा नहीं कि यह एक दृष्टि से द्रव्य और दूसरी दृष्टि से कोई अन्य चीज लोहा, काँसा, सोना इत्यादि भौतिक वस्तुएँ सदा द्रव्य ही रहती है, पर अरस्तू का द्रव्य इसके विपरीत है। उनका द्रव्य सापेक्ष प्रत्यय और स्वरूप परस्पर सापेक्ष विचार है और इसलिए यह तरल प्रत्यय है। अरस्तू का द्रव्य सदैव स्वरूप से मिश्रित रहता है और द्रव्य का अस्तित्व एवं गुण का परिवर्तन उसमें मिलते हुए स्वरूप के द्वारा होता है। इसलिए एक ही वस्तु कभी द्रव्य और कभी स्वरूप होता रहता है। उदाहरणार्थ – लकड़ी की बनी चीजों के सम्बन्ध से यह (लकड़ी) जड़ है, किन्तु लकड़ी स्वतः वृक्ष के सम्बन्ध से आकार है। अर्थात् एक ही वस्तु एक के सम्बन्ध से जड़ है और दूसरे के सम्बन्ध से आकार है, अर्थात् दोनों चीज एक साथ चलती है। जड़ में परिवर्तन की क्षमता होती है और जो चीज परिवर्तित होकर हमारे सामने आ जाती है, वह आकार होती है

"Matter is that which becomes and what it becomes is form"

इस प्रकार द्रव्य और स्वरूप स्थिर न होकर गत्यात्मक प्रत्यय है। यही निष्कर्ष यहाँ 'आकार' के लिए भी लागू होता है। आकार एक स्थिर कल्पना है जो नहीं बदलती है। यदि किसी वस्तु का आकार गोल है तो वह सदा गोल ही रहेगा यदि वह चकोर है तो सदा चकोर ही रहेगा, पर स्वरूप एक तरल प्रत्यय है जो प्रभावित होता रहता है। इसलिए यह एक सापेक्षिक कल्पना है। आकार एक निरपेक्ष प्रत्यय है। आकार स्वरूप का ही एक अंग के रूप में हो सकता है।

स्वरूप में क्रिया निहित रहती है पर आकार में क्रिया नहीं रहती है। एक मनुष्य के हाथ की भिन्न भिन्न क्रियाएँ होती है। ये क्रियाएँ उसके स्वरूप के कारण है। इस तरह स्वरूप में क्रिया का होना आवश्यक है, परन्तु आकार के लिए नहीं। जैसे मनुष्य के कटे हुए हाथ में 'आकार होता है पर उसमें क्रिया नहीं होती। अतः उसमें स्वरूप की निश्चित रूप से कमी मानी जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वरूप केवल आकार ही नहीं उससे और कहीं अधिक है।

अरस्तू का द्रव्य Particular है और स्वरूप Universal है। स्वरूप एक प्रत्यय है और प्रत्यय Universal है इसलिए स्वरूप भी Universal है। जिस प्रकार स्वरूप और द्रव्य एक दूसरे से पृथक नहीं किये जा सकते उसी तरह सामान्य और विशेष को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। अरस्तू का सामान्य और विशेष एक-दूसरे पर आश्रित है जो Plato के 'सामान्य' सम्बन्धी विचार से भिन्न है। परन्तु अरस्तू का विशेष से मतलब Individual से नहीं है।

इस तरह सामान्य और विशेष अलग-अलग नहीं रह सकते। एक की उपस्थिति के लिए दूसरे की भी उपस्थिति का होना जरूरी है।

— To be continued —